इतिहास

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. इतिहासकार धार्मिक परम्परा के इतिहास का पुनर्निर्माण करने के लिए किन-किन स्रोतों का उपयोग करते हैं?

अथवा

इतिहासकारों ने सिंधु संस्कृति के निर्वाह के तरीकों को किस प्रकार नई दिशा प्रदान की है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर– पुरातत्वविदों को उत्खनन में पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है जिसके आधार पर इतिहासकार सुगमता से इतिहास का निर्धारण कर सकते हैं। हड़प्पा सभ्यता से हमें पर्याप्त मात्रा में स्त्री-प्रतिमा तथा मातृदेवी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। एक मूर्ति के गर्भ से पौधा निकल रहा है जिससे पता चलता है कि वे मातृदेवी की पूजा करते थे। इसके अतिरिक्त वे सम्भवतः आद्य शिव की भी आराधना करते थे। सिंधु सभ्यता में पशु-पक्षियों की पूजा का भी प्रचलन था। जानवरों में एक शृंगी वृषभ की सर्वाधिक आराधना की जाती थी। वहीं पक्षियों में फाख्ता उनका सम्मानीय पक्षी था। हड़प्पा से हमें नाग पूजा तथा पीपल के वृक्ष की पूजा के भी संकेत मिलते हैं।

2. मगध सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद कैसे बना? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– छठी शताब्दी ई. प. तक उत्तर तथा मध्य भारतीय क्षेत्र में सोलह महाजनपदों का उदभव हो चुका था जिनमें मगध सबसे अधिक शक्तिशाली था। मगध के सबसे अधिक शक्तिशाली महाजनपद बनने के प्रमुख कारणों का विवरण इस प्रकार है—

(i) मगध तीन ओर से सुरक्षित पहाड़ियों से घिरा हुआ था।

(ii) मगध के मध्य से जीवनदायिनी गंगा तथा सोन नदी बहती थीं।

(iii) मगध की सीमाओं में प्रचुर मात्रा में खनिज सम्पदा विशेषकर लोहे की खाने थीं।

(iv) मगध महाजनपद को शक्तिशाली तथा महत्वाकांक्षी राजाओं की प्राप्ति हुई।

(v) मगध शासकों ने अपनी कूटनीति तथा वैवाहिक सम्बन्धों से मगध को शक्तिशाली बनाया। इस प्रकार मगध महाजनपद को एक नहीं अपितु अनेक लाभदायक स्थितियाँ प्राप्त थीं जिसके कारण मगध महाजनपद ही शक्तिशाली महाजनपद बना।

3. विजयनगर साम्राज्य ने किस प्रकार अपना उत्थान-पतन देखा? इसे किस प्रकार पुनर्जीवित किया गया?

अथवा

विजयनगर साम्राज्य के राजकीय केन्द्र में संरचना महानवमी डिब्बा के साथ जुड़े अनुष्ठानों और प्रथाओं की पहचान कीजिए।

उत्तर– विजयनगर अथवा विजय का शहर एक शहर एवं एक साम्राज्य दोनों के लिए प्रयोग किया जाने वाला नाम था जिसकी स्थापना 14वीं शताब्दी में हुई थी। अपने चरमोत्कर्ष में विजयनगर साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप में सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था।

1565 में बीजापुर, अहमदनगर एवं गोलकुण्डा की संयुक्त सेनाओं ने इस साम्राज्य पर हमला कर इसे लूटा तथा कुछ ही वर्षों के भीतर विजयनगर पूरी तरह से उजड़ गया।

17वीं-18वीं शताब्दियों तक यह पूरी तरह से नष्ट हो गया फिर भी कृष्णा-तुंगभद्रा दोआब क्षेत्र के लोगों की स्मृतियों में यह जीवित रहा। उन्होंने इसे हम्पी नाम से याद रखा जिसका आविर्भाव यहाँ की स्थानीय मातृदेवी पंपादेवी के नाम से हुआ था। इन मौखिक परम्पराओं के साथ-साथ पुरातात्विक खोजों, स्थापत्य के नमूनों, अभिलेखों एवं अन्य दस्तावेजों ने विजयनगर के साम्राज्य को पुनः खोजने में विद्वानों की सहायता की।

4. भारत में औपनिवेशिक काल के दौरान कुछ पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) क्यों विकसित किए गये? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– छावनियों की तरह पर्वतीय सैरगाह (हिल स्टेशन) भी औपनिवेशिक शहरी विकास का एक विशेष पहलू था। हिल स्टेशनों की स्थापना एवं विकास का सम्बन्ध सर्वप्रथम ब्रिटिश सेना की आवश्यकताओं से था। ये हिल स्टेशन सैनिकों को ठहराने, सीमा की निगरानी रखने एवं शत्रु के विरुद्ध हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे। इनके अतिरिक्त हिल स्टेशनों की जलवायु यूरोप की ठंडी जलवायु से मिलती-जुलती थी इसलिए अंग्रेज शासकों को भी ये क्षेत्र आकर्षित करते थे। इन हिल स्टेशनों को अंग्रेजों ने सेनेटोरियम के रूप में भी विकसित किया जहाँ सिपाहियों को विश्राम करने एवं इलाज कराने के लिए भेजा जाता था। रेलवे के विकास से ये पर्वतीय सैरगाह अनेक प्रकार के लोगों की पहुँच में आ गये। अब भारतीय भी पर्यटन के लिए वहाँ जाने लगे।

5. सिन्धु सभ्यता के नगर नियोजन की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जो आज भी प्रांसगिक हैं।

उत्तर- सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं-

-

(1) व्यवस्थित सड़कें तथा गलियाँ-- सिन्धु सभ्यता के नगरों की सड़कें, सम्पर्क मार्ग एवं गलियाँ एक सुनिश्चित योजना के अनुसार निर्मित थीं। सड़कें व गलियाँ ग्रिड-पद्धति में निर्मित थीं एवं सड़कें सीधी और चौड़ी थीं। सभी सड़कें पूर्व से पश्चिम या उत्तर से दक्षिण की ओर आपस में जुड़ी हुई थीं।

(2) सड़कों के मोड़ पर दीवारों में गोलाई–- बैलगाड़ियों, पशुओं तथा अन्य वाहनों के आवागमन को ध्यान में रखते हुए सड़कों के मोड़ पर मकानों की दीवारों में गोलाई रखी जाती थी जिससे सड़क के

मोड़ पर दृश्यता स्पष्ट रहे और आवागमन में कोई असुविधा न हो। गोलाई के लिए एक विशेष प्रकार की गोल ईंटों का प्रयोग किया जाता था।

(3), नियोजित जल निस्तारण व्यवस्था— सिन्धु सभ्यता में जल निस्तारण की व्यवस्था अति उत्तम थी। यहाँ सड़कें तथा गलियाँ लगभग एक 'ग्रिड पद्धति' में बनी थीं जो एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। प्रत्येक घर में गन्दे पानी के निकास के लिए नालियाँ थीं जो सड़कों की नालियों से मिलती थीं। सड़क की नालियाँ सड़क के दोनों ओर बनाई जाती थीं। नालियाँ मिट्टी के गारे, चूने और जिप्सम से बनाई जाती थीं। नालियों को ईंटों और पत्थरों से ढका जाता था। नालियों का पानी आगे एक बड़ी नाली में गिरता था जो पानी को शहर से बाहर ले जाती थीं।

(4) व्यवस्थित आवासीय भवन—- आवास एक निश्चित योजना के अनुसार ही बनाये जाते थे। प्रत्येक मकान में एक स्नानागार, आँगन और आँगन के चारों ओर कमरे हुआ करते थे। शौचालय व रसोईघर में दरवाजों, खिड़कियों आदि की भी समुचित व्यवस्था थी। मकानों का कोई हिस्सा सड़क या गली की ओर निकला हुआ नहीं होता था। मकानों के निर्माण में प्रायः पक्की ईंटों का प्रयोग होता था।

6. सिन्धु सभ्यता के गृह स्थापत्य की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जो आज भी प्रासंगिक हैं।

उत्तर- सिंधु सभ्यता के गृह स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ-- सिंधु सभ्यता के गृह स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं–

(i) आवासीय भवन मुख्य रूप से एक आँगन पर केन्द्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने हुए थे।

(ii) आँगन सम्भवतः खाना पकाने और कताई करने (विशेषकर गर्म व शुष्क मौसम में।) जैसी गतिविधियों का केन्द्र था।

(iii) आवास के मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आँगन सीधे तौर पर दिखाई नहीं देता था।

(iv) प्रत्येक घर में ईंटों के फर्श से बना एक स्नानागार होता था जिसकी नालियाँ दीवार के जरिए सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

7. मगध के सबसे शक्तिशाली महाजनपद होने के कारण बताइये।

उत्तर- छठी शताब्दी ई. पू. तक उत्तर और मध्य भारतीय क्षेत्र में 16 महाजनपदों का उद्भव हो चुका था जिनमें मगध सबसे अधिक शक्तिशाली था। मगध के सबसे शक्तिशाली महाजनपद होने के निम्नलिखित कारण थे–

(i) मगध तीनों ओर से सुरक्षित पहाड़ियों से घिरा हुआ था।

(ii) मगध के मध्य में जीवनदायिनी गंगा तथा सोन नदी बहती थी।

(iii) मगध की सीमाओं में प्रचुर मात्रा में खनिज सम्पदा उपलब्ध थी विशेष रूप से लोहे की खानें थीं।

(iv) मगध महाजनपद को शक्तिशाली तथा महत्वाकांक्षी राजाओं की प्राप्ति हुई।

(v) मगध शासकों ने अपनी कूटनीति तथा वैवाहिक सम्बन्धों से मगध को शक्तिशाली बनाया।

इस प्रकार मगध महाजनपद को एक नहीं अपितु अनेक लाभदायक स्थितियाँ प्राप्त थीं जिनके कारण मगध महाजनपद ही शक्तिशाली महाजनपद बना।

8. अभिलेखों से कौन-कौन से ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं?

उत्तर-- अभिलेखों से इतिहास के अध्ययन में बहुत सहायता प्राप्त होती है। अभिलेखों से हमें तत्कालीन शासक की महानता तथा व्यक्तित्व का बहुआयामी विवरण प्राप्त होता है। एक अभिलेख जो सम्राट अशोक के बारे में है, उसमें सम्राट की दो उपाधियों का उल्लेख मिलता है। जैसे देवानांप्रिय (देवताओं का प्रिय) और पियदस्सी (प्रियदर्शी) देखने में सुंदर, मनोहर (मुखाकृति वाला), अभिलेखों द्वारा हम किसी सम्राट के शासनकाल की घटनाओं का उचित कालक्रम निर्धारित कर सकते हैं। एक अभिलेख कलिंग विजय के पश्चात् सम्राट अशोक की वेदना और पश्चाताप को मार्मिक ढंग से दर्शाता है। इसके पश्चात् सम्राट अशोक ने साम्राज्यवादी नीति का परित्याग कर बौद्ध धर्म अपनाया तथा बौद्ध धर्म के धम्म पद के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु बहुत से अभिलेख खुदवाए। प्रयाग प्रशस्ति स्तम्भ शिलालेख से समुद्र गुप्त के काल की घटनाओं का ज्ञान होता है। वहीं जूनागढ़ शिलालेख से राजा रूद्रदामन द्वारा सुदर्शन झील के निर्माण की जानकारी प्राप्त होती है। इस तरह अभिलेखों से अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

9. महानवमी डिब्बा की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर- महानवमी डिब्बा की विशेषताएँ- विजयनगर साम्राज्य में महानवमी डिब्बा शहर के सबसे ऊँचे स्थानों में से एक पर

स्थित एक विशाल मंच था जिसका आकार लगभग 11000 वर्ग फीट तथा ऊँचाई 40 फीट थी। हमें ऐसे साक्ष्य मिले हैं, जिससे पता चलता है कि इस पर एक लकड़ी की संरचना बनी हुई थी। कारीगरों ने इसके आधार पर सुन्दर नक्काशी भी की है।

सम्भवतः इस संरचना से जुड़े अनुष्ठान महानवमी से जुड़े थे, जिसका सम्बन्ध उत्तरी भारत के दशहरे, बंगाल की प्रसिद्ध दुर्गा पूजा तथा प्रायद्वीपीय भारत के नवरात्री तथा महानवमी के त्योहारों से है। विजयनगर के शासक इस अवसर पर अपनी प्रतिष्ठा तथा शक्ति का प्रदर्शन करते थे। इस अवसर पर अनेक अनुष्ठान होते थे । राजा के अश्व की पूजा, मूर्ति की पूजा तथा जानवरों की बलि इस अवसर के मुख्य आकर्षण थे। इसके अतिरिक्त नृत्य, कुश्ती, घोड़ों, हाथियों, रथों और सैनिकों की शोभायात्रा भी इस अवसर के अन्य आकर्षण थे। इस अवसर पर नायक एवं अधीनस्थ राजा विजयनगर के शासक को भेंट भी देते थे। इन उत्सवों तथा कार्यक्रमों के गहन सांकेतिक अर्थ थे। राजा अथवा शासक त्योहारों के अन्तिम दिन अपनी तथा अपने नागरिकों की सेना का खुले मैदान में आयोजित एक भव्य समारोह में निरीक्षण करते थे। इस अवसर पर नायक राजा के लिए बड़ी मात्रा में उपहार तथा निश्चित कर लाते थे।

10. विजयनगर साम्राज्य के मन्दिरों की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर- विजयनगर साम्राज्य के मंदिरों की विशेषताएँ--विजयनगर साम्राज्य के मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं–

(i) विजयनगर के मंदिर स्थापत्य कई नए तत्वों का समावेश हुआ जिसमें विशाल स्तर पर बनायी गयी संरचनाएँ शामिल हैं। ये संरचनाएँ राजकीय सत्ता का प्रतीक थीं जिनका सबसे अच्छा उदाहरण राय गोपुरम अथवा राजकीय प्रवेश द्वार थे।

(ii) राय गोपुरम लम्बी दूरी से ही मंदिर के होने का संकेत देते थे।

(ii) मंदिरों में मण्डप व लम्बे स्तम्भों वाले गलियारे होने थे जो प्रायः मंदिर परिसर में स्थित देवालयों के चारों ओर बने थे।

(iv) मंदिरों में सभागारों का निर्माण कराया जाता था जिनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों के कार्यों में किया जाता था। देवी देवताओं को झूला झुलाने एवं उनके वैवाहिक उत्सवों का आनंद मनाने हेतु अन्य सभागारों का प्रयोग किया जाता था।

(v) कई मंदिर रथ के आकार के थे जिनमें विट्ठल मंदिर प्रमुख था। इस मंदिर के परिसर में पत्थर के टुकड़ों के फर्श से निर्मित गलियाँ थीं जिनके दोनों ओर बने मंडपों में व्यापारी दुकानें लगाया करते थे। इस मंदिर के पत्थरों पर सुन्दर फूलों, भयानक जानवरों और नृत्य करती हुई सुंदर स्त्रियों का उत्कीर्णन है जिन्हें देखकर दर्शक स्तब्ध रह जाते हैं।

11. आपके विचार से हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण थे?

उत्तर- हमारे विचार से हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। छावनियों की तरह पर्वतीय सैरगाह (हिल स्टेशन) भी औपनिवेशिक शहरी विकास का एक विशेष पहलू था। हिल स्टेशनों की स्थापना एवं विकास का सम्बन्ध सर्वप्रथम ब्रिटिश सेना की आवश्यकताओं से था। ये हिल स्टेशन सैनिकों को ठहराने, सीमा की निगरानी रखने एवं शत्रु के विरुद्ध हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे। इनके अतिरिक्त हिल स्टेशनों की जलवायु यूरोप की ठंडी जलवायु से मिलती-जुलती थी इसलिए अंग्रेज शासकों को भी ये क्षेत्र आकर्षित करते थे। इन हिल स्टेशनों को अंग्रेजों ने सेनेटोरियम के रूप में भी विकसित किया जहाँ सिपाहियों को विश्राम करने एवं इलाज कराने के लिए भेजा जाता था। रेलवे के विकास से ये पर्वतीय सैरगाह अनेक प्रकार के लोगों की पहुँच में आ गये। अब भारतीय भी पर्यटन के लिए वहाँ जाने लगे।

12. आपके विचार से औपनिवेशक शहरों के बनने से सामाजिक जीवन में किस प्रकार के बदलाव दिखाई

दिए।

उत्तर- हमारे विचार से औपनिवेशिक शहरों के बनने से सामाजिक जीवन में कई बदलाव आये। नए शहरों में सामाजिक सम्बन्ध काफी हद तक बदल गए जिनका विवरण निम्नलिखित प्रकार से है–

(i) सार्वजनिक मेल मिलाप के स्थलों में परिवर्तन हुआ। यद्यपि अब तक पुराने शहरों में लोगों में आपसी मेलजोल भी कम हो चुका था लेकिन फिर भी लोगों का मेल मिलाप सार्वजनिक पार्क, टाउन हॉल, रंगशालाओं एवं सिनेमाघरों के माध्यम से हो जाता था।
(ii) शहरों में नए सामाजिक समूह बनने लगे और लोगों की पुरानी पहचानें लगभग समाप्त हो गईं।
(iii) औपनिवेशिक शहरों में महिलाओं के लिए नए अवसर उपलब्ध थे। समाचार पत्र-पत्रिकाओं, आत्मकथाओं और पुस्तकों के माध्यम से मध्यमवर्गीय महिलाएँ स्वयं को अभिव्यक्त करने की कोशिश कर रही थी। फलस्वरूप परम्परागत पितृसत्तात्मक नियम कानून बदलने लगे जिससे अनेक लोगों में असंतोष व्याप्त हुआ।
(iv) शहरों में मेहनती गरीबों या कामगारों का एक नया वर्ग उभर रहा था क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से गरीब लोग रोजगार को तलाश में शहर आ रहे थे। कुछ लोगों को शहर नए अवसरों का स्रोत दिखाई देते थे तो कुछ अन्य लोगों को एक भिन्न जीवन शैली का आकर्षण शहरों की ओर खींच रहा था।

13. सिंधु सभ्यता के लोगों के निर्वाह के प्रमुख साधन कौन-कौन से थे? बताइए।

उत्तर— सिंधु सभ्यता के लोगों के निर्वाह के प्रमुख साधन (तौर-तरीके) निम्नलिखित हैं–
(i) सिंधु सभ्यता के लोग शाकाहार एवं मांसाहार दोनों पर आश्रित थे। ये लोग कई प्रकार की वनस्पतियों तथा जानवरों से आहार प्राप्त करते थे। मछली उनका प्रमुख आहार थी।
(ii) अनाजों के रूप में हड़प्पा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, चना, दाल, तिल आदि का प्रयोग करते थे । हड़प्पा स्थलों में कई स्थानों से इनके अवशेष प्राप्त हुए हैं।
(iii) बाजरा और चावल के आहार के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। बाजरे के दाने गुजरात के हड़प्पा स्थलों से प्राप्त हुए हैं, चावल के दानों के अवशेष लोथल से अल्प मात्रा में प्राप्त हुए हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि चावल का आहार के रूप में प्रयोग अल्प मात्रा में ही होता था।
(iv) भैंस, भेड़, बकरी तथा सूअर से भी हड़प्पा संस्कृति के लोग आहार प्राप्त करते थे। संभवत: वह पशुपालन का कार्य करते थे।
(v) आहार के रूप में हिरण व घड़ियाल के मांस के प्रयोग के भी साक्ष्य मिलते हैं परन्तु इनकी शिकारी प्रवृत्ति के बारे में अनिश्चितता है कि यह शिकार स्वयं करते थे या अन्य शिकारी समुदायों से प्राप्त करते थे। पक्षियों के मांस को आहार के रूप में प्रयोग करने के भी साक्ष्य मिले हैं।

14. रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से कौन-सी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं?

उत्तर— शक शासक रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से सुदर्शन झील के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। संस्कृत में लिखित इस अभिलेख के अनुसार जलद्वारों व तटबंधों वाली इस झील का निर्माण मौर्य काल में एक स्थानीय राज्यपाल ने करवाया था, लेकिन एक भीषण तूफान की वजह से इसके तटबंध टूट गए और इसका सारा पानी बह गया। तत्कालीन शासक रुद्रदामन ने

अपने खर्चे से इसकी मरम्मत करवायी थी। तत्पश्चात् गप्त वंश के शासक ने पुनः इस झील की मरम्मत करवायी थी।

इस अभिलेख से यह भी स्पष्ट होता है कि रुद्रदामन ने संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने का प्रयास किया।

15. विजयनगर साम्राज्य के व्यापार के विकास को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विजयनगर साम्राज्य में प्रारम्भ की गई अमर नायक प्रणाली की मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—14वीं से 16वीं सदी के इस काल में सामरिक दृष्टिकोण से घोड़ों का महत्व बहुत अधिक था। अश्वसेना की युद्ध में निर्णायक भूमिका होती थी। प्रारंभिक चरणों में अरब व्यापारियों द्वारा अरब तथा मध्य एशिया से घोड़ों के व्यापार को नियन्त्रित किया जाता था। 'कुदिरई चेट्टी' नामक स्थानीय व्यापारी भी इस कार्य को करते थे। पुर्तगालियों ने 1498 ई. में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर व्यापारिक और सामरिक केन्द्र स्थापित करने के प्रयास आरम्भ कर दिए। पुर्तगाली बन्दुक के प्रयोग में कुशल थे, इसलिए वे समकालीन राजनीति में शक्ति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गए। विजयनगर की समृद्धि इसकी व्यापारिक प्रतिष्ठा की सूचक थी। मसालों, रत्नाभूषणों एवं उत्कृष्ट वस्त्रों के लिए विजयनगर के बाजार दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। व्यापार यहाँ की प्रतिष्ठा का मानक था। यहाँ की समृद्ध और सम्पन्न प्रजा के कारण बहुमूल्य विदेशी वस्तुओं की मांग भी अत्यधिक थी। इस प्रकार आयात तथा निर्यात द्वारा राज्य को उच्च राजस्व की प्राप्ति होती थी।

16. बम्बई का वाणिज्यिक शहर के रूप में किस प्रकार विकास हुआ ? संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—19वीं शताब्दी के अन्त तक भारत का आधा आयात तथा निर्यात वाणिज्यिक शहर बम्बई से होता था। उस समय व्यापार की मुख्य वस्तु अफीम तथा नील थी। यहाँ से ईस्ट इण्डिया कम्पनी चीन को अफीम का निर्यात किया करती थी जिसमें भारतीय व्यापारी तथा विचौलिये हिस्सेदारी लेते थे। इस व्यापार से शुद्ध भारतीय पूँजीपति वर्ग का निर्माण हुआ।

पारसी, मारवाड़ी, कोंकणी, मुसलमान, गुजराती, ईरानी, आर्मेनियाई, यहूदी, बोहरे, बनिये इत्यादि यहाँ के मुख्य व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित थे। 1869 ई. में स्वेज नहर को व्यापार के लिए खोला गया जिससे बम्बई के व्यापारिक सम्बन्ध शेष विश्व के साथ अत्यधिक मजबूत हुए। बम्बई सरकार तथा पूँजीपति भारतीयों ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए बम्बई को भारत की सबस महत्वपूर्ण वाणिज्यिक शहर घोषित कर दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक बम्बई म भारतीय व्यापारी कॉटन मिल जैसे नवीन उद्योगों में अत्यधिक धन का निवेश कर रहे थे। इसके अतिरिक्त वे इससे सम्बन्धित सभी गतिविधियों का संचालन कर रहे थे।

17. सिंधु सभ्यता में गृह स्थापत्य की चार विशेषताएँ बताइए।

अथवा

सिंधु सभ्यता के लोगों के बीच सामाजिक और आर्थिक भिन्नताओं को जानने के लिए पुरातत्वविदों ने शवाधानों का कैसे प्रयोग किया है? परख कीजिए।

उत्तर– सिंधु सभ्यता में निचला शहर गृह स्थापत्य का अनूठा उदाहरण पेश करता है। इस सभ्यता में गृह-स्थापत्य की चार विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) आवासीय भवन मुख्यतः एक आँगन पर थे। (ii) आँगन सम्भवतः खाना पकाने तथा कताई करने (खासकर गर्म और शुष्क मौसम में) जैसी गतिविधियों का केन्द्र था। (iii) आवास के मुख्य द्वार से आन्तरिक भाग अथवा आँगन सीधे तौर पर दिखाई नहीं देता था। (iv) प्रत्येक घर में ईंटों के फर्श से बना एक स्नानघर होता था जिसकी नालियाँ दीवार के जरिए सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

18. अशोक ने धम्म के प्रतिपादन हेतु कौन-कौन से व्यावहारिक उपाय किए? वर्णन कीजिए।

अथवा

अशोक के अभिलेखों का इतिहास निर्माण में क्या महत्व है? समझाइए।

उत्तरं– बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक का हृदय परिवर्तित हो गया । तथा उसने घोषणा की कि वह रणभेरी घोष (युद्ध की घोषणा) के स्थान पर धम्म घोष का पालन करेगा साथ ही इसका प्रचार-प्रसार भी करेगा। अतः अशोक ने अपनी इस घोषणा के अनुरूप सभी धर्मों का सरल स्वरूप स्थापित किया जो धम्म कहलाया। अशोक का यह धर्म मूलतः नैतिक नियम ही है जो उसने अपनी प्रजा में प्रसारित किए जिनमें बड़ों के प्रति आदर, संन्यासियों एवं ब्राह्मणों के प्रति उदारता, सेवक व दासों के साथ उदार व्यवहार तथा दूसरे धर्मों और परम्पराओं का आदर सम्मिलित है। अशोक ने अपने धम्म को प्रसारित करने के लिए न सिर्फ एक बौद्ध संगीति बुलवाई अपितु विदेशों में अपने धर्म प्रचारक (धम्म महामात्य) भी भेजे। संक्षेप में कहा जाए तो अशोक का धम्म सभी धर्मों का सार, सरल तथा मानवतावादी स्वरूप लिए था।

19. विजयनगर के प्रशासन में अमर नायक प्रणाली की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– विजयनगर के शासकों द्वारा मन्दिर निर्माण की स्थापत्य कला में कई नए तत्वों का समावेश किया गया है। राय गोपुरम् इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है। गोमुरम् की मीनारों की विशालता इस बात को प्रमाणित करती है कि तत्कालीन विजयनगर के शासक इतने ऊँचे गोपुरम् के निर्माण हेतु आवश्यक सामग्री, तकनीक व साधन जुटाने में सक्षम थे। गोपुरम् एक प्रकार से राजकीय प्रवेश द्वार थे जो दूर से ही मन्दिर होने का संकेत देते थे। गोपुरम् के अन्य विशिष्ट अभिलक्षणों में मंडप तथा लम्बे स्तम्भों वाले गलियारे देवस्थलों को चारों ओर से घेरे हुए थे।

20. लॉटरी कमेटी क्या थी ? इसके अन्तर्गत कलकत्ता के नगर-नियोजन के लिए कौन-कौन से कदम उठाए गए?

उत्तर-- गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली के पश्चात् नगर-नियोजन का कार्य सरकार की सहायता से लॉटरी कमेटी ने जारी रखा। लॉटरी कमेटी का यह नाम इसलिए पड़ा यह कमेटी नगर सुधार के लिए पैसे की व्यवस्था जनता के बीच लॉटरी बेचकर करती थी।

लॉटरी कमेटी द्वारा नगर नियोजन के लिए उठाए गए कदम-- (i) लॉटरी कमेटी ने कलकत्ता शहर का नया मानचित्र बनाया ताकि कलकत्ता को नया रूप दिया जा सके। (ii) लॉटरी कमेटी की प्रमुख गतिविधियों में शहर में हिन्दुस्तानी जनसंख्या वाले भाग में सड़कें . बनवाना एवं नदी किनारे से अवैध कब्जे हटाना सम्मिलित था। (iii) कलकत्ता शहर के भारतीय हिस्से को साफ-सुथरा बनाने के लिए कमेटी ने बहुत-सी झोंपड़ियों को साफ कर दिया एवं गरीब मजदूरों को वहाँ से बाहर निकालकर कलकत्ता के बाहरी किनारे पर निवास हेतु जगह दी गई।

21. सिंध सभ्यता की लिपि को रहस्यमय क्यों कहा गया है ? इस लिपि की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ?

उत्तर— सिंध सभ्यता की लिपि को रहस्यमय इसलिए कहा जाता है क्योंकि अब तक इसे पढ़ा नहीं जा सका है।

विशेषताएँ– (i) हड़प्पाई मुहरों पर एक पंक्ति के रूप में कुछ अंकित है। पुरातत्वविदों का कथन है कि शासक के नाम तथा पदवी का वर्णन है। अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त हैं तथा सबसे बड़े अभिलेख में लगभग 26 चिह्न हैं, (ii) यह लिपि स्वर तथा व्यंजनों पर आधारित वर्णमालीय रूप में न होकर चित्रात्मक रूप में है जो किसी बात या वस्तु का प्रतीक है। लिपि के चिह्नों की संख्या 375 से 400 के बीच है, (iii) यह लिपि दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती थी क्योंकि दायीं ओर अन्तराल अधिक है तथा बायीं ओर अन्तराल कम है; जैसे कि लिखते समय बायीं ओर अन्तराल कम पड़ गया हो, (iv) इस लिपि की लिखावट बहुत-सी वस्तुओं; जैसे मुहरों, ताँबे के औजारों, मर्तबान के किनारों, मिट्टी की पट्टिकाओं, आभूषणों, अस्थियों तथा सूचनापट्टों पर प्राप्त हुई है।

21. मौर्य साम्राज्य के इतिहास की पुनर्रचना के लिए इतिहासकारों द्वारा उपयोग में लिए गए स्रोतों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य के इतिहास की पुर्नरचना के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोतों क उपयोग किया है। इन स्रोतों में मूर्तिकला जैसे पुरातात्विक प्रमाण भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त समकालीन रचनाएँ भी मौर्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं, जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार के आए यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा लिखा गया वर्णन तथा चन्द्रगुप्त

मौर्य के मन्त्री कौटिल्य या चाणक्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र । साथ ही परवर्ती जैन, बौद्ध और पौराणिक ग्रन्थों तथा संस्कृत वाङ्मय द्वारा भी मोर्य शासकों के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्रोत, जो मोर्य वंश के इतिहास की विशद् जानकारी देते है, सम्राट अशोक द्वारा उत्कीर्ण करवाए गए अभिलेख हैं।

22. विजयनगर के विट्ठल मंदिर को अनूठा और रोचक क्यों समझा जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— तत्कालीन विजयनगर जैसे विशाल साम्राज को जलापूर्ति विशेषतः तुंगभद्रा नदी की द्रोणी से हुआ करती थी जो विजयनगर साम्राज्य के उत्तर-पूर्व में बहती है। इसके आस-पास मुख्य रूप से ग्रेनाइट की पहाड़ियाँ विस्तृत रूप से फैली हुई हैं जिन्होंने उस समय के विजयनगर शहर को चारों ओर से घेरा हुआ था। इन पहाड़ियों से निकलने वाली अनेक जल-धाराए विजयनगर साम्राज्य को लाभान्वित करती थीं। विजयनगर साम्राज्य में लगभग सभी जल-धाराओं के साथ-साथ बाँध बनाकर विभिन्न आकारों के तालाब अथवा जलाशय बनाए गए थे, क्योंकि विजयनगर शहर वहाँ के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था। अतः पानी को एकत्र करके शहर तक ले जाने के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए थे। यहाँ के सबसे महत्वपूर्ण जलाशय कमलपुरम् का निर्माण 15वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में हुआ जिसके पानी से न केवल आस-पास के खेतों को सींचा जाता था, अपितु इसे एक नहर के माध्यम से शाही केन्द्र तक भी ले जाया गया था। कमलपुरम् जलाशय के अतिरिक्त हिरिया नहर एक अन्य महत्वपूर्ण नहर थी जिसमें तुंगभद्रा पर बने बाँध से पानी लाया जाता था। इस जल का प्रयोग धार्मिक केन्द्र से शहरी केन्द्र को पृथक् करने वाली घाटी की सिंचाई करने के लिए किया जाता था।

23.. "अंग्रेज सरकार ने अपनी जातीय श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए सोच-समझकर मद्रास शहर का विकास किया।" उचित तर्क देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर-- अंग्रेज सरकार ने अपनी जातीय श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए सोच समझकर मद्रास शहर का । विकास किया। इस कथन की पुष्टि हेतु 5 निम्न तथ्य प्रस्तुत हैं-- (i) मद्रास में फोर्ट सेंट जॉर्ज व्हाइट टाउन का केन्द्र बन गया जहाँ. अधिकांशत: यूरोपीय आबादी रहती थी। दीवारों एवं बुर्जी ने इसे एक विशेष प्रकार की घेराबन्दी प्रदान की। (ii) किले के भीतर रहने का निर्णय रंग एवं धर्म के आधार पर किया जाता था। (iii) ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लोगों को भारतीयों के साथ विवाह करने की अनुमति नहीं थी। (iv) यूरोपीय ईसाई होने के कारण - डच और पुर्तगालियों को वहाँ रहने की छूट थी। (v) प्रशासकीय न्यायिक व्यवस्था की संरचना भी गोरे लोगों के पक्ष में ही थी। संख्या की दृष्टि से कम होने के बावजूद यूरोपीय लोग शासक थे। (vi) मद्रास का विकास वहाँ रहने वाले मुट्ठी-भर गोरों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया। (vii) ब्लैक टाउन का विकास किले के या बाहर किया गया था। इस आबादी को सीधी पंक्तियों में बसाया गया था जो कि औपनिवेशिक नगरों की प्रमुख विशेषता थी।

24. सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन की वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता बताइए।

उत्तर– सिंधु सभ्यता में नगर एक निश्चित योजना के अनुसार बनाये जाते थे। सिंधु सभ्यताकालीन नगर मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में हमें जो नगर-नियोजन दृष्टिगत होता है उसकी वर्तमान सन्दर्भ में भी उपादेयता है क्योंकि वर्तमान समय के नगरों में भी उसी प्रकार की संरचना का विकास किया जाता है जो मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में विद्यमान थी। इन दोनों नगरों को दो भागों में विभाजित किया गया है, दर्ग क्षेत्र, जहाँ शासक तथा उच्च अधिकारी रहते थे और निचला शहर, जहाँ निम्न वर्ग के लोग रहते थे। आधुनिक नगर नियोजन भी कुछ इसी तरह होता है, एक तरफ उच्च लोगों के निवास होते हैं तथा दूसरी तरफ मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों के निवास होते हैं। दोनों . नगरों में सड़कों की पूरी व्यवस्था रखी जाती थी जो आज के नगरों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दोनों नगरों में सड़कों का निर्माण भी वर्तमान नगरों की भाँति ही किया गया। वर्तमान में भी यदि किसी नगर का निर्माण किया जाता है तो उसमें वही तत्व : परिलक्षित होते हैं जो सिन्धु सभ्यता के नगर नियोजन में विद्यमान थे। प्रत्येक घर में कआँ होता था, अपशिष्ट पानी निकालने के लिए प्रत्येक घर में नालियाँ बनी होती थी एवं सभी घरों में खिड़कियाँ होती थीं। इन दोनों नगरों में सड़कों का ढाल इस प्रकार बनाया जाता था कि हवा चलने के साथ-साथ सड़कों की सफाई हो जाती थी। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में भी सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन की प्रासंगिकता है क्योंकि आज भी नगरों का नियोजन ऐसे ही किया जाता है जैसे हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में किया गया था।

25. महाजनपदों की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– छठी शताब्दी ई. पू. में भारत में अनेक महाजनपदों का उदय हुआ। सोलह महाजनपदों का उल्लेख हमें जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' तथा बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकाय' में मिलता है। इन सोलह महाजनपदों के नाम इस प्रकार थे–अंग, मगध, काशी, कोशल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, काम्बोज तथा गान्धार। इनमें सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध था। ये महाजनपद दो प्रकार के थे, प्रथम गण तथा द्वितीय राज्य। गण अनेक छोटे-छोटे राज्यों के समूहों से मिलकर बनता था वहीं राज्य में एक ही राजा, एक ही राजधानी तथा एक ही राजचिह्न होता था। वज्जि तथा शाक्य इस समय के मुख्य गण थे।

प्रत्येक महाजनपद की अपनी एक राजधानी होती थी जिसकी प्रायः किलेबंदी की जाती है थी जो राजधानियों के रख-रखाव, प्रारंभिक सेनाओं तथा नौकरशाही के लिए आवश्यक है। आर्थिक स्रोत के अर्जन तथा संरक्षण में सहायक होती थी। महाजनपदों की एक विस्तृत कराधान व्यवस्था थी, साथ ही उन्नत कृषि पैदावार के कारण राज्यों के पास पर्याप्त मात्रा में धन रहता था।

लगभग छठी शताब्दी ई. पू. संस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना ब्राह्मणों द्वारा की गई जिसमें राजा व प्रजा के लिए राजकीय एवं सामाजिक नियमों का निर्धारण किया गया तथा यह भी

अपेक्षा की गई कि शासक क्षत्रिय वर्ग से ही हों। धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तन्त्र तैयार कर लिया जिनमें सैनिक प्रायः कृषक वर्ग से ही भर्ती किए जाते थे।

26. विजयनगर के विट्ठल मन्दिर को अनूठा और रोचक क्यों समझा जाता था? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– विट्ठल मन्दिर विजयनगर का दूसरा महत्वपूर्ण मन्दिर है। भगवान विट्ठल को विष्णु का । स्वरूप माना जाता है तथा ये महाराष्ट्र में प्रमुख देव के रूप में पूजे जाते हैं। कर्नाटक में भगवान विट्ठल के मन्दिर की स्थापना तथा पूजा-आराधना विजयनगर के शासकों द्वारा अलग-अलग प्रदेशों की परम्पराओं को आत्मसात करने का उदाहरण है। इस मन्दिर की विशेषता रथ के आकार का एक अनूठा मन्दिर है। कहा जाता है कि रथ के आकार के मन्दिर सूर्य देवता हेतु निर्मित किए गए थे। मन्दिर के परिसरों में पत्थर के टुकड़ों के फर्श से निर्मित गलियाँ हैं जिनके दोनों ओर बने मंडपों में व्यापारी अपनी दुकानें लगाया करते थे। विट्ठल मन्दिर के पत्थरों पर सुन्दर फूलों, भयानक जानवरों और नृत्य करती हुई सुन्दर स्त्रियों का उत्कीर्णन है, जिन्हें देखकर दर्शक स्तब्ध रह जाता है। विट्ठल मन्दिर की मूर्ति कला, कोमलता और भयानकता का सन्तुलित रूप है।

27. ब्रिटिश औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड्स सँभाल कर क्यों रखे जाते थे ?

उत्तर– ब्रिटिश औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड्स शहरीकरण के विकास की गति को समझने के लिए सँभाल कर रखे जाते थे। इसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं—

(i) जनसंख्या में क्यों तथा किस गति से वृद्धि हो रही है? शहरी तथा ग्रामीण जनसंख्या का क्या प्रतिशत है ? यदि इसमें कोई परिवर्तन हो रहा है तो क्यों हो रहा है?

(ii) शहरों में व्यापारिक गतिविधियाँ किस प्रकार संचालित हो रही हैं तथा उनमें क्या परिवर्तन हो रहा है ?

(iii) व्हाइट तथा ब्लैक टाउन उस समय नस्लीय भेदभाव के प्रतीक थे। यहाँ किस प्रकार की गतिविधियाँ हो रही हैं ? यह अवश्य ज्ञात किया जाता था।

(iv) जनसंख्या के आँकड़े नागरिकों की मृत्यु दर तथा बीमारियों का पता लगाने में सहायक होते हैं। ।

(v) ये आँकड़े स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते थे।

(vi) इन आँकड़ों से कानून व्यवस्था बनाये रखने में अत्यधिक सहायता प्राप्त होती है।

(vii) शहर में समाज का जीवन कैसा है तथा उसमें किस प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है ?

(ix) औपनिवेशिक शहरों के और अधिक विकास में क्या-क्या तथा किस प्रकार की योजनाएँ सहायक हो सकती हैं ?

(x) यदि शहरों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है तो उनमें किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है?

28. सिंधु सभ्यता से प्राप्त मुहरों, लिपि एवं तौल के साधनों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-- मुहरों की प्रासंगिकता-सिंधु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण पुरावस्तु मुहरें हैं जो बड़ी संख्या में इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से पायी गयी हैं। इन मुहरों पर एक लिपि अंकित है जो अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है जिसके कारण इन मुहरों का महत्व वर्तमान में भी बना हुआ है। जब मुहरों पर अंकित इस लिपि को पढ़ने में सफलता मिल जायेगी तब सिंधु सभ्यता के सन्दर्भ में नयी जानकारियाँ हमारे समक्ष आयेंगी।

लिपि की प्रासंगिकता-- सिंधु सभ्यता वासियों की एक लिपि भी थी, परन्तु दुर्भाग्यवश अभी तक इस लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है। जब तक यह लिपि पढ़ी नहीं जाती तब तक वर्तमान सन्दर्भ में इस लिपि की प्रासंगिकता का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

माप-तौल की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता-- सिंधु सभ्यता में माप-तौल के लिए बाँटों का प्रयोग किया जाता था। सिंधु सभ्यता के बाँट जिस अनुपात में होते थे उसी अनुपात में वर्तमान में भी होते हैं। सिंधु सभ्यता के सभी नगरों में माप-तौल प्रणाली एक समान जो कि वर्तमान में भी पूरे देश में एक समान है। निश्चित ही माप-तौल प्रणाली की प्रेरणा हमें सिंधु सभ्यता से मिली होगी। सिंधु की माप-तौल प्रणाली आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी।

29. अशोक द्वारा अपने अधिकारियों और प्रजा को दिये गये संदेशों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर— सम्राट अशोक ने सभी धर्मों का सरल स्वरूप स्थापित किया जो धम्म कहलाया। अशोक ने अपने अधिकारियों और प्रजा को धम्म का संदेश दिया जिसकी वर्तमान सन्दर्भ में भी प्रासंगिकता है। अशोक के धम्म का स्वरूप मानवतावादी था जो नैतिक नियमों के पालन पर जोर देता है। अशोक के धम्म में बड़ों का आदर, सेवक तथा दासों के प्रति उदार व्यवहार तथा दूसरे सम्प्रदायों के प्रति आदर की भावना सम्मिलित है। वर्तमान युग में हम देखते हैं कि नई युवा पीढ़ी अपने बड़ों (माता-पिता) को एक बोझ समझते हैं तथा उन्हें उपेक्षित एवं अकेला छोड़ देते हैं। धनी तथा शक्तिशाली लोग गरीब एवं उपेक्षित लोगों के अधिकारों को दबाकर उनका शोषण करते हैं। व्यक्ति अपने धर्म को अच्छा बताकर दूसरे धर्मों की बुराई करता है। अशोक के धम्म में जिन आदर्शों का उल्लेख किया गया है, व्यक्ति उन्हें अपने जीवन में उतार कर एक आदर्श एवं सुखी जीवन जी सकता है।

30. विजयनगर के प्रशासन में अमर नायक प्रणाली की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-- सेना प्रमुख जिनके पास सशस्त्र सैनिक होते थे और जो किलों पर नियंत्रण रखते थे 'नायक' कहलाते थे। नायकों की प्रवृत्ति अधिकतर अवसरवादी होती थी तथा समय के अनुसार ये शासकों का प्रभुत्व स्वीकार कर लेते थे और अवसर पाकर विद्रोह भी कर देते थे। ये तेलुगु या कन्नड़ भाषा बोलते थे। इनके विद्रोह को शासकों द्वारा सैनिक कार्यवाही से दबाया जाता था। विजयनगर साम्राज्य

ने दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली के आधार पर 'अमर-नायक' नामक राजनीतिक प्रणाली की खोज की। अमर शब्द का उद्भव संस्कृत के शब्द 'समर' से हुआ है जिसका अर्थ है-लड़ाई या युद्ध। इसका अर्थ फारसी के शब्द अमीर से भी मिलता है और अमीर यानी ऊँचे पद का कुलीन व्यक्ति । अमर-नायकों को सैनिक कमांडरों की पदवी दी जाती थी। राय शासकों द्वारा उन्हें प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। अमर-नायकों का कार्य अपने-अपने क्षेत्रों में किसानों, शिल्पकारों, व्यापारियों से राजस्व संग्रह कर राजकीय कोष में जमा करना था, राजस्व का कुछ निर्धारित प्रतिशत इन्हें अपने खर्चे हेतु दिया जाता था। ये राज्य की सैनिक सहायता भी करते थे और वर्ष में एक बार भेंट या उपहार राजा को प्रदान कर अपनी स्वामिभक्ति का प्रदर्शन करते थे।

31. भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान शहरीकरण के प्रतिरूपों में देखे गए महत्वपूर्ण बदलावों को उजागर कीजिए।

उत्तर-- भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान छोटे कस्बों के पास आर्थिक रूप से विकसित होने के अधिक अवसर नहीं थे। हालाँकि कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास जैसे शहरों का तेजी से विस्तार हुआ तथा जल्द ही ये विशाल शहर बन गए। इन तीनों शहरों के नए व्यावसायिक तथा प्रशासनिक केन्द्रों के रूप में विकसित होने के साथ-साथ कई अन्य तत्कालीन शहर कमजोर भी होते जा रहे थे। ये शहर औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का केन्द्र होने की वजह से भारतीय सूती कपड़े जैसे निर्यात उत्पादों के लिए संग्रह डिपो थे, लेकिन इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के बाद इस प्रवाह की दिशा परिवर्तित हो गई तथा इन शहरों में ब्रिटिश कारखानों में बनी वस्तुएं उतरने लगी। भारत से तैयार माल की जगह कच्चे माल का निर्यात होने लगा। इस आर्थिक गतिविधि ने औपनिवेशिक शहरों को देश के परम्परागत शहरों तथा कस्बों से एकदम अलग खड़ा कर दिया। 1853 ई. में रेलवे की शुरुआत होने के साथ ही शहरों की कायापलट होने लगी जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र परम्परागत शहरों से दूर जाने लगा। साथ ही जमालपुर, वॉल्टेयर तथा बरेली जैसे रेलवे नगरों का उदय हुआ।

32. सिंधु सभ्यता का अन्त किस प्रकार हुआ था? संक्षेप में बताइए।

उत्तर– सिंधु सभ्यता का अन्त निम्न प्रकार से हुआ--

(i) ऐसे साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनसे पता चलता है कि लगभग 1800 ई. पू. तक चोलिस्तान (पाकिस्तान) जैसे क्षेत्रों में अधिकांश विकसित सिंधु सभ्यता स्थल उजड़ चुके थे। इसके साथ ही गुजरात, हरियाण एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नई बस्तियों में आबादी बढ़ने लगी थी।

(ii) ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर हड़प्पा व क्षेत्र 1900 ई. पू. के पश्चात् भी अस्तित्व में रहे। कुछ चुने हुए सिंधु सभ्यता स्थलों की भौतिक संस्कृति में परिवर्तन आया, जैसे–

(अ) सभ्यता की विशिष्ट पुरावस्तुएँ, जैसे-- बाँट, मुहरें एवं विशिष्ट मनके समाप्त हो गए।

(ब) लेखन, लम्बी दूरी का व्यापार एवं शिल्प विशेषज्ञता भी समाप्त हो गई।

(स) प्रायः थोड़ी वस्तुओं के निर्माण के लिए थोड़ा ही माल प्रयोग में लाया जाने लगा।
(द) आवास निर्माण की तकनीकों का हास हुआ तो विशाल सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण बन्द हो गया।
इस प्रकार पुरावस्तुएँ एवं बस्तियाँ इन संस्कृतियों में एक ग्रामीण जीवन-शैली की ओर संकेत करती हैं। इन संस्कृतियों को 'उत्तर हड़प्पा' अथवा 'अनुवर्ती संस्कृतियाँ कहा गया।

33. इतिहास के अध्ययन हेतु सिक्के महत्वपूर्ण स्रोत हैं, टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-- प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के लिए सिक्के बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। देश के विभिन्न भागों से इस काल के सिक्के बहुत अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। सिक्को पर खुदे हुए अक्षरों, चिह्नों तथा उनके भार और धातु के आधार पर वर्गीकरण के द्वार व्यापारिक सम्बन्धों तथा शासकों के सम्बन में क्रमबद्ध जानकारी प्राप्त होती है। आहत सिक्कों पर चिह्न तथा विशेष राजाओं के वंश के नाम से उनको जारी करने वाले शासको के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त होता है। कुषाण प्रथम शासक थे जिन्होंने सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर जारी किए। चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के छठी शताब्दी ईसा पूर्व प्रचलन में आए। सिक्कों के द्वारा व्यापार विनिमय में आसानी होती थी। सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहा जाता है।

34. विजयनगर साम्राज्य के विरूपाक्ष मन्दिर की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए। .

उत्तर--- विजयनगर साम्राज्य के विरुपाक्ष मन्दिर के निर्माण में कई शताब्दियों का लम्बा समय लगा। सबसे प्राचीन मन्दिर, जो नवीं-दसवीं शताब्दी के कालखण्ड में निर्मित था, का में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के बाद व्यापक विस्तार किया गया। राजा कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में मुख्य मन्दिर के सामने मंडप का निर्माण कराया। इस मन्दिर के स्तम्भों पर अत्यन्त सुन्दर उत्कीर्णन किया गया है। पूर्वी गोपुरम् भी राजा कृष्णदेव राय के शासनकाल में ही निर्मित हुआ। मन्दिर में निर्मित सभागारों को विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों हेतु प्रयोग में लाया जाता था। देवी-देवताओं को झूला झुलाने हेतु तथा देवी-देवताओं के वैवाहिक उत्सवों का आनन्द मनाने हेतु अन्य सभागारों का प्रयोग किया जाता था। यह मन्दिर तत्कालीन समय की' स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

35. औपनिवेशिक सरकार ने नगरों के मानचित्र तैयार करने पर क्यों ध्यान दिया? वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर--- प्रारंभिक वर्षों में औपनिवेशिक सरकार ने निम्नलिखित कारणों से मानचित्र बनाने पर विशेष ध्यान दिया–
(i) सरकार का मानना था कि किसी स्थान की बनावट एवं भूदृश्य को समझने के लिए मानचित्र आवश्यक होते हैं। इस जानकारी के आधार पर वे शहरी प्रदेश पर नियन्त्रण बनाये रख सकते थे।

(ii) जब शहरों का विस्तार होने लगा तो न केवल उनके विकास की योजना तैयार करने के लिए बल्कि शहर को विकसित करने एवं अपनी सत्ता मजबूत बनाने के लिए भी मानचित्र बनाये जाने लगे।
(iii) शहरों के मानचित्रों से हमें उसकी पहाड़ियों, नदियों एवं हरियाली का पता चलता है। यह जानकारी रक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों के लिए योजना बनाने में बहुत काम आती है।
(iv) मकानों की सघनता एवं गणवत्ता, सडकों की स्थिति आदि से किसी प्रदेश की व्यावसायिक सम्भावनाओं का पता लगाने एवं कराधान की रणनीति बनाने में भी सहायता मिलती है।

36. सिंधु सभ्यता कालीन धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण में पुरातत्वविदों के समक्ष समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– सिंधु सभ्यता कालीन धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण में पुरातत्वविदों के समक्ष उत्पन्न कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार हैं---

1. असामान्य एवं अपरिचित वस्तुओं का परीक्षण-- आरंभिक पुरातत्वविदों के अनुसार असामान्य एवं अपरिचित लगने वाली अनेक वस्तुएँ सम्भवतः धार्मिक महत्व की होती थीं, जैसे-आभूषणों से लदी हुई नारी-मृण्मूर्तियाँ - (जिन्हें मातृदेवियों की संज्ञा दी गई थी)। 19 इनमें से कुछ के शीर्ष पर विस्तृत प्रसाधन थे। 'पुरोहित राजा' के समान पुरुषों की दुर्लभ पत्थर से बनी मूर्तियाँ जिनमें उन्हें एक लगभग मानवीकृत मुद्रा में एक हाथ घुटने पर रखकर बैठा हुआ दिखाया गया था। इसके अतिरिक्त विशाल स्नानागार, कालीबंगन एवं लोथल से मिली वेदियों जैसी संरचनाओं को आनुष्ठानिक महत्व का माना गया है।

2. मुहरों का परीक्षण-- पुरातत्वविदों ने अनुष्ठान के दृश्य वाली मुहरों को धार्मिक आस्थाओं एवं प्रथाओं से जोड़ने का प्रयास किया है, जबकि उन मुहरों को जिन पर पेड़-पौधे उत्कीर्ण है, प्रकृति पूजा से जोड़ा है। वहीं मुहरों पर बनाए गए एक सींग वाले जानवर. (एक शृंगी) को कल्पित एवं संश्लिष्ट माना है। 'योगी' की मुद्रा (पालथी मार कर बैठना) वाली आकृति वाली मुहरों का सम्बन्ध हिन्दू धर्म से जोड़ा गया है क्योंकि इसे 'आद्य शिव' की संज्ञा दी गई है। इसके अतिरिक्त पत्थर की शंक्वाकार वस्तुओं को लिंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

37. "छठी शताब्दी ई. पू. से ही भारतीय उपमहाद्वीप में 'भू' और 'समुद्री' मार्गों का जाल फैला हुआ था।" इस कथन कों व्यापार के संदर्भ में प्रमाणित कीजिए।

उत्तर--- उत्तरी भारत की एकता तथा गुप्त शासकों द्वारा देश में शान्ति स्थापना के कारण आन्तरिक और विदेशी व्यापार में बहुत उन्नति हुई जिसके कारण देश में व्यापक आर्थिक प्रगति हुई। छठी शताब्दी ई. पू. से ही परिवहन के लिये भूतल मार्गों और सामुद्रिक यातायात के लिए समुद्री मार्गों का जाल बिछ गया था। भू-ग मध्य एशिया और उसके आगे तक जाते थे पाटलिपुत्र जैसे कुछ नगर नदी मार्गों के किन तथा पुहार, सोपारा जैसे नगर समुद्र तट प बसे हुए थे। जलमार्ग अरब सागर से होते

हुए, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया तथा बंगाल की खाड़ी से होते हुए चीन और दक्षिण पूर्व एशिया तक फैल गया था।

विभिन्न प्रकार का कपड़ा, खाद्य-पदार्थ, अनाज, मसाले, नमक आदि आन्तरिक व्यापार की मुख्य वस्तुएँ थीं। निर्यात की वस्तुओं में कपड़ा, जड़ी-बूटी, मसाले, काली मिर्च, नील तथा हाथी दाँत की वस्तुएँ मुख्य थीं जिनको अरब सागर के रास्ते भूमध्य क्षेत्र तक भेजा जाता था।

38. विजयनगर राज्य के किन्हीं चार ऐतिहासिक स्मारकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-- विजयनगर साम्राज्य में महानवमी डिब्बा शहर के सबसे ऊँचे स्थानों में से एक पर स्थित एक विशाल मंच था जिसका आकार लगभग 11000 वर्ग फीट तथा ऊँचाई 40 फीट थी। हमें ऐसे साक्ष्य मिले हैं, जिससे पता चलता है कि इस पर एक लकड़ी की संरचना बनी हुई थी। कारीगरों ने इसके आधार पर सुन्दर नक्काशी भी की है।

सम्भवतः इस संरचना से जुड़े अनुष्ठान महानवमी से जुड़े थे, जिसका सम्बन्ध उत्तरी भारत के दशहरे, बंगाल की प्रसिद्ध दुर्गा पूजा तथा प्रायद्वीपीय भारत के नवरात्री तथा महानवमी के त्योहारों से है। विजयनगर के शासक इस अवसर पर अपनी प्रतिष्ठा तथा शक्ति का प्रदर्शन करते थे। इस अवसर पर अनेक अनुष्ठान होते थे । राजा के अश्व की पूजा, मूर्ति की पूजा तथा जानवरों की बलि इस अवसर के मुख्य आकर्षण थे। इसके अतिरिक्त नृत्य, कुश्ती, घोड़ों, हाथियों, रथों और सैनिकों की शोभायात्रा भी इस अवसर के अन्य आकर्षण थे। इस अवसर पर नायक एवं अधीनस्थ राजा विजयनगर के शासक को भेंट भी देते थे। इन उत्सवों तथा कार्यक्रमों के गहन सांकेतिक अर्थ थे। राजा अथवा शासक त्योहारों के अन्तिम दिन अपनी तथा अपने नागरिकों की सेना का खुले मैदान में आयोजित एक भव्य समारोह में निरीक्षण करते थे। इस अवसर पर नायक राजा के लिए बड़ी मात्रा में उपहार तथा निश्चित कर । लाते थे।

39. प्रमुख भारतीय व्यापारियों ने औपनिवेशिक शहरों में स्वंय को किस प्रकार स्थापित किया? बताइए।

उत्तर– पूर्व औपनिवेशिक काल अर्थात् सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी में मुगलों द्वारा बसाए गए शहरों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं–

(i) मुगलों द्वारा बसाए गए शहर जनसंख्या के केन्द्रीकरण, अपने विशाल भवनों एवं अपनी शोभा व समृद्धि के लिए प्रसिद्ध थे।

(ii) आगरा, दिल्ली व लाहौर शाही प्रशासन एवं सत्ता के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। मनसबदार व जागीरदार प्रायः इन्हीं शहरों में रहते थे। इन सत्ता केन्द्रों में आवास का होना किसी अभिजात वर्ग की स्थिति और प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता था।

(iii) इन शहरी केन्द्रों में सम्राट एवं कलीन वर्ग की उपस्थिति के कारण विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करना आवश्यक था।

(iv) राजकोष भी शाही राजधानी में ही स्थित था इसलिए राज्य का राजस्व नियमित रूप से राजधानी में ही आता था।

(v) बादशाह एक किलेबन्द महल में रहता था एवं शहर एक ही दीवार से घिरा हुआ होता था, जिसमें अलग-अलग द्वारों से आवागमन पर नियन्त्रण रखा जाता था।

(vi) शहरों में मन्दिर, मस्जिद, उद्यान, मकबरे, बाजार, महाविद्यालय आदि स्थित होते थे।